९९. अखण्डता, सार्वभौमता ही मानव परम्परा का वैभव है

१८-०९-१३

अखण्डता समाज में, सार्वभौमता होता है व्यवस्था में | होना समझ में आया है | समाज में अखण्डता, व्यवस्था में सार्वभौमता होना समझ में आया, जिसको विकल्प रूप में प्रस्तुत किया | अभी तक सभी प्रकार के परीक्षण हुए हैं | दूसरे भाषा में अनेक प्रकार का परीक्षण सम्पन्न हुआ, मूल्यांकन हुआ | प्रतिभा, पुरस्कार भी हुआ | यह सब होते हुए अखण्डता, सार्वभौमता का पता नहीं लगा | इतना ही नहीं, सारे तपस्वी, सिद्ध, संत भी हुए हर समुदाय में; फिर भी इसका पता नहीं लगा | मतलब मानवता पता लगाने के लिये, मानव का पुण्य से मुझमें प्रेरणा हुई | मैं वेदमूर्ति परिवार का सन्तान होते हुए, वैदिक विचारों को भले प्रकार से जांचने का अवसर हुआ | उसमें जब अखण्डता, सार्वभौमता नहीं मिला अर्थात मानवता नहीं मिला तब अनुसंधान का विचार हुआ | यह निश्चय ३०वर्ष में हुआ | ३०वें वर्ष से साधना, अभ्यास, ध्यान, समाधि से ज्ञान होगा ऐसा सोच, ऐसा सूझ आध्यात्मवाद से मिला | आध्यात्मवाद तीन स्वरूप में हमको प्राप्त हुआ | वेद संहिता के रूप में उपनिषद, उपाय से गुरुजनों के सान्निध्य में होने का सलाह रही | वेदान्त अध्ययन की वस्तु रही | इस प्रकार इन तीनों भागों में आध्यात्मवाद का परीक्षण करने से मानवीयता का ज्ञान नहीं हुआ |

तभी साधना किया, विकल्प को प्रस्तुत किया | विकल्प विधि से यह पता चला विकसित चेतना ही मानवत्व है, इतनी छोटी सी बात | आचरण ही परम्परा है | विकसित चेतना का आचरण ही व्यवहार प्रमाण , विचार प्रमाण, अनुभव प्रमाण के रूप में आता है | इन तीनों प्रमाणों को देखा | जीने से मानवता प्रमाणित होना निश्चय हुआ | जीकर देखा, आचरण ही प्रमाण होने के रूप में अनुभव हुआ; जिसके आधार पर ही विकल्प को प्रस्तुत किया | विकल्प विधि से भाषा के रूप में, भाषा के अर्थ के प्रयोजन में हम मानवीयता को पहचान सकते हैं | मानव चेतना ही मानवीयता है | मानव चेतना ही विकसित चेतना है | मानव चेतना ही आशित चेतना है क्योंकि मानव ही मानवीयता का आशा करने वाला है | न गाय करता है, न भैंस करता है, न बैल- बकरी करता है, न हाथी, न ऊँट करता है | ये जब समझ में आया, विकल्प प्रस्तुत करने में सहायता हुई | इस क्रम में विकल्प को प्रस्तुत करने की विधि आवश्यकता के रूप में प्रस्तुत हुई; | जिसको मैंने स्वीकारा | फलस्वरूप में विकल्प को प्रस्तुत किया | अब धीरे-धीरे लोक विदित होता जा रहा है | इस क्रम में भले ही धीरे हो |

धीरे और जल्दी का कल्पना मानव ही करता है | मानव के अनुसार विचार के ऊपर निर्भर है | हर मानव अपने ढंग से समय का गणना करता है, प्रयोजन के अर्थ में | प्रयोजन केवल आचरण ही है | यह विकल्प को समझने से स्वीकार हुआ | इस विधि से विकल्प प्रस्तुत होने के पश्चात शिक्षाविदों के पास पहुंचे, किसी ने नहीं सुना | राज नेताओं के पास पहुंचे, नहीं सुना | अन्ततोगत्वा छत्तीसगढ़ सरकार अपनाया | छत्तीसगढ़ में रायपुर के पास एक अछोटी नाम का गाँव है, उसी गाँव में एक केंद्र स्थापित किया है | यह केंद्र अध्ययन करने, शिविर करने, सत्संग करने, गोष्ठी करने के उद्देश्य से स्थापित किया है | उसमें कुछ लोग स्वीकारते हुए उत्साहित हुए | इसी के आधार पर स्थापित हुई, फलस्वरूप अध्ययन, गोष्ठी, शिविर, सत्संग वहां चलता है | मैं यथावत अमरकंटक में रहता हूँ | यह कार्यक्रम चलते-चलते अछोटी में १० वर्ष बीत गये | अब धीरे-धीरे एक मानव तीर्थ बनाने की इच्छा है | जिसके साथ अभी राजस्थान में सरदारशहर है | वहां एक यूनीवर्सिटी है जिसका प्रबंधक गांधी विद्या मंदिर है | गांधी विद्या पूरा न पड़ने के आधार पर विकल्प को स्वीकारा | विकल्प के आधार पर एक मानव तीर्थ बनाने का हम

विचार किया | उसमें मददगार हो गया | उसी के क्रम में ३५-४० एकड़ जमीन खरीद चुके हैं | एक-एक एकड़ जमीन में ५-५ लाख रुपया लगा है | इस क्रम में यह क्रय विधि मध्य प्रदेश में मेरे द्वारा प्रेरित, स्थापित दिव्य पथ संस्थान पूरा वर्ष में काम करने योग्य है, के साथ रेजिस्ट्री हुई है | उसके लिए दिया गया दान-दक्षिणा पर कोई शुल्क देना नहीं होगा अर्थात आय कर देना नहीं होगा | यह विधिवत तैयार हुआ, उसी समय में मानव तीर्थ का प्रस्ताव मैंने गांधी विद्या मंदिर को प्रस्तुत किया, वे स्वीकार लिए राजस्थान में और जमीन खरीद लिये | ३० एकड़ और भी खरीदने का इच्छा रखे हैं | ऐसे कुल १०० एकड़ हो जायेगा, मानव तीर्थ के लिए | इसमें १०० लोगों के रहने पीने की व्यवस्था रहेगी | कोई जल्दी नहीं है, आराम आराम से होगा | इस क्रम में मैं अपने विचार का विस्तार पक्ष में चला | गांधी विद्या मंदिर के सम्पर्क में सर्वप्रथम ग्लोबल हार्मनी संस्था, जो रशिया स्थापित किया, पास में आया | एक गोष्ठी हुई दिल्ली में | विभिन्न देशों से लोग आये थे | लोगों ने प्रस्ताव का सराहना किया |

फलस्वरूप गांधी विद्या मंदिर प्रेरित हुए | अभी वह दिव्य पथ संस्थान के साथ काम करने के लिये तैयार हुआ | जो जमीन लिया जा रहा है,वह छतीसगढ़ में है | कुछ समय के बाद जमीन का पूरा अधिकार दिव्य पथ संस्थान को सौंपने को कहा है | इसी आधार पर उसे लिया जा रहा है, दोनों संस्थाओं के नाम से | इस क्रम में हम विश्वास करते हुए, शिवनाथ और खारून नदी के संगम में एक मानव तीर्थ बनाने का विचार किये हैं | अमरकंटक छोटा जगह होने के कारण यहाँ कोई जमीन नहीं मिल पाया, इस आधार पर छतीसगढ़ में लेना पड़ा | वहीं मानव तीर्थ बनाने का सोचे हैं | मानव तीर्थ में मध्यस्थ दर्शन में निष्ठान्वित, पारंगत विद्वान रहेंगे | वहां अभ्यास एवं प्रमाणित होने की व्यवस्था रहेगी | इसका मुख्य उद्देश्य विशुद्ध अध्ययन और शोध रहेगा | अध्ययन शिविर और गोष्ठी रहेगा | मध्यस्थ दर्शन बनाम सहअस्तित्ववाद सहज वाङ्मय का सर्वाधिकार हम दिव्य पथ संस्थान को सौपेंगे | 'दिव्य पथ' स्वयं अस्तित्व में अनुभव एवं जागृति का ही मार्ग प्रशस्त करता है | मानव तीर्थ में वाङ्मय का स्रोत सहित वस्तु का संरक्षण होगा | यह एक सघन कार्यक्रम है | हमारे साथ रहे अध्ययनशील कुछ निष्ठावान बुद्धिजीवियों को वहां रहने के लिए हम इंगित कर चुके हैं | वही उसे संभालेंगे | इस क्रम में अर्थात मानव तीर्थ के क्रम में विकसित चेतना का अध्ययन उन्ही लोगों को कराया जाएगा जो विकसित चेतना पूर्वक जीना चाहते हैं | प्रमाण प्रस्तुत करना चाहते हैं | परम्परा बनाना चाहते हैं | इस क्रम में हम काफी संतुष्ट हैं | मानव का पुण्य से विकल्प तैयार हुआ |

विकल्प के आधार पर मानव तीर्थ की तैयारी की सम्भावना बन गयी | इससे हम संतुष्ट हैं | मानव तीर्थ में ही हर विद्वान, समझदार, स्वावलम्बी होने का व्यवस्था रहेगा | समझदारी का स्वरूप आचरण के स्वरूप में होगा | स्वावलम्बन पुरुषार्थ के रूप में रहेगा, श्रम के रूप में रहेगा | अभी का स्थिति में समीक्षा करें तो पता लगता है कि हम श्रम से दूर होने का काम किये हैं | अभी हम प्रस्तुत कर रहे हैं श्रम सम्बंध को बनाए रखने के लिए | इसे संसार कैसा स्वीकारेगा देखना है | संसार स्वीकारने के आधार पर ही अखण्डता, सार्वभौमता होगा; क्योंकि अनेक परिस्थितियों में धरती विभाजित है | कहीं ज्यादा ठंडी, कहीं ज्यादा गर्मी, ज्यादा पानी, कम पानी, नहीं पानी | इस प्रकार का वितंडावाद बना हुआ है | इसे सामान्य बनाने का कोई उपाय नहीं है | ऐसा बसा हुआ अर्थात अनेक परिस्थितियों में बसा हुआ मानव सुखी होना चाहता है | सुखी होने की अपेक्षा ही मानवीयता का मूल आधार है | इसी क्रम में मानव विकसित चेतना को पहचानने का आवश्यकता को अनुभव किया |

फलस्वरूप मैं विकल्प को प्रस्तुत किया | इस क्रम में मानव एक वर्ष, दो वर्ष के अध्ययन से, अभ्यास से, श्रम और समझदारी का संयुक्त स्वरूप में ही जी पाता है | इसी का शिक्षा मानव तीर्थ में रहेगा | अध्ययन रूपी शिक्षा सघन शास्त्राभ्यास के बिना संभव नहीं है | शास्त्र हम प्रस्तुत कर चुके हैं | ऐसी शिक्षा को स्वीकारना या न स्वीकारना मानव परम्परा के ऊपर है |

व्यापार विधि से श्रम को नकारने की जगह में आदमी आ चुका है | इस विधि से पुरुषार्थ का कमी होना स्वाभाविक रहा | पुरुषार्थ और परमार्थ का संयुक्त रूप में मानव मानवीयता का आचरण करेगा, जो विकसित चेतना होगी | विकसित चेतना स्वरूप का अध्ययन शब्द के अर्थ के रूप में मानव तीर्थ में कराया जाएगा | जो मानव तीर्थ में प्रवेश पाते हैं, उनका मूल उद्देश्य विकसित चेतना में जीने का होना आवश्यक है | विकसित चेतना विधि से मानव सर्वदेश काल में समझदार होना सम्भव है | सर्वदेश काल में मानवीयतापूर्ण आचरण नहीं होने की स्थिति में अखण्डता, सार्वभौमता होता ही नहीं | अखण्डता, सार्वभौमता ही विकसित चेतना का मतलब है | विकसित चेतना विधि से ही मानव संस्कृति, सभ्यता का प्रमाण है और विधि, व्यवस्था का प्रमाण मानव चेतना विधि से सम्भव है | इसी सम्भावना के आधार पर एक-दूसरे का आवश्यकता है | कुछ लोग आवश्यकता को अनुभव करते हैं, कुछ लोग नहीं करते हैं | धीरे-धीरे सभी करेंगे, इस आधार पर शुरू किया है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)